इस साल समय से पहले ही आ गया वसंत, जापान-मेक्सिको में समय से पहले खिले फूल, यूरोप में छंटी बर्फ

वाशिंगटन ।
जलवायु परिवर्तन की वजह से पिछला वर्ष जहां ऐतिहासिक रूप से सबसे गर्म साबित हुआ, वहीं इतिहास में इस वर्ष का फरवरी माह सबसे गर्म दर्ज होने जा रहा है। पूरी दुनिया में ज्यादातर जगहों पर फरवरी का तापमान सामान्य से ज्यादा दर्ज किया गया है। जलवायु परिवर्तन के कारण हर जगह वसंत समय से पहले ही पहुंच गया है।

जापान से मेक्सिको तक फूल जल्दी खिल गए हैं। यूरोप में स्की रिजोर्टों से बर्फ गायब हो चुकी है और टेक्सास में तापमान 38 डिग्री सेल्सियस पहुंच चुका है। अमेरिकी ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) अभी आंकड़े जुटा रहा है। हालांकि, शुरुआती रुझान बताते हैं कि यह लगातार नौवां महीना होगा, जब ऐतिहासिक रूप से तापमान रिकॉर्ड स्तर पर टूटने वाला है। एनओएए 14 मार्च फरवरी के अंतिम आंकड़े प्रकाशित करेगा।

साल के मध्य से राहत की संभावना

एनओएए के वायुमंडलीय वैज्ञानिक कैरिन ग्लीसन ने बताया, अल नीनो का असर 2024 के मध्य तक खत्म होगा। इसके बाद दुनिया को गर्मी से राहत मिल सकती है। हालांकि, इसके बाद तेजी से ला नीना का प्रभाव बढ़ेगा, जिससे पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में कड़ाके की सर्दी वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ सकती है। एनओएए का अनुमान है कि 22 फीसदी संभावना है कि 2024 सबसे गर्म वर्ष के रूप में 2023 का रिकॉर्ड तोड़ देगा और 99 फीसदी संभावना है कि यह अब तक के 5 सबसे गर्म वर्षों में शामिल होगा।

ग्लीसन ने कहा, इंटरनेट पर उन्होंने जापान, मेक्सिको व यूरोप की तस्वीरें देखी हैं। यहां समय से पूर्व वसंत ने दस्तक दे दी है। अमेरिका में कई जगह तापमान सामान्य से 22 डिग्री सेल्सियस तक अधिक था, टेक्सास के किलेन शहर में 38 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया, जबकि इन दिनों यहां सामान्य तापमान 16 डिग्री होता है।

लोगों की जान जा रही

पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च के भौतिक विज्ञानी एंडर्स लीवरमैन ने कहा, ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ी गर्मी वैश्विक मौसम प्रणालियों पर कहर बरपा रही है। ध्रुवों, पहाड़ों से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र स्तर बढ़ रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया इरविन के वैज्ञानिक जेन बाल्डविन ने कहा, दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी की वजह से लोगों की जान जा रही है।

न्यूज ब्रीफ

गाजा में 100 लोगों की मौत पर बाइडन और अल-थानी ने जताया दुख, युद्ध विराम और बंधकों की रिहाई पर दिया जोर

वाशिंगटन । इजराइल और हमास के बीच युद्ध जारी है। इस बीच, अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी ने गाजा में मारे गए 104 फलस्तीनियों की घटना पर दुख व्यक्त किया।

उन्होंने युद्ध विराम की आवश्यकता को जाहिर करते हुए मानवीय सहायता बढ़ाने पर जोर दिया। गौरतलब है कि इजराइल और हमास के बीच सात अक्तूबर से युद्ध जारी है, जब हमास ने पांच हजार इजराइली शहरों पर दागे थे। युद्ध में अब तक दोनों पक्षों के करीब 30000 लोगों की मौत हो चुकी है। दोनों नेताओं ने बंधकों की रिहाई पर भी बात व्हाइट हाउस ने दोनों नेताओं की बात के बाद एक बयान जारी किया। बयान में कहा गया कि दोनों नेताओं ने नागरिक जीवन के नुकसान पर दुख व्यक्त किया है। दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि जल्द से जल्द गाजा में जारी युद्ध पर रोक लगानी होगी। युद्ध विराम के साथ-साथ दोनों नेताओं ने बंधकों की रिहाई पर भी बात की। बयान के अनुसार, दोनों नेताओं की एक राय है कि हमास को बिना किसी देरी के बंधकों को रिहा करना चाहिए। उन्होंने सहायता सामाग्री को हर एक फलस्तीनी तक पहुंचाने के तरीकों पर भी चर्चा की। दरअसल, हमास का आरोप है कि इजराइली सैनिकों ने सहायता ट्रकों के पास खाने की आस में खड़े फलस्तीनियों को गोलियों से भून डाला है। हमले में करीब 104 लोगों की मौत हो गई। वहीं, विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने एक ब्रीफिंग में फिलीस्तीनी लोगों की मौत पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि हम सुबह से इजराइल के संपर्क में हैं। यूएनएससी बैठक का आयोजन संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भी गाजा में हुए हमले की कड़ी निंदा व्यक्त की। हमले के कारण संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने न्यूयॉर्क में शाम 4.15 बजे एक निजी बैठक का आयोजन किया है। बैठक का उद्देश्य उत्तरी गाजा में सहायता का इंतजार करते समय मारे गए फलस्तीनियों पर चर्चा करना है। युद्धविराम को लेकर जारी है चर्चाएं पिछले कुछ दिनों से गाजा में अस्थायी युद्धविराम की चर्चा जोरों पर है। इसके कयास तब लगने शुरू हुए जब अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि गाजा में अस्थायी युद्धविराम और बंधकों की रिहाई के लिए एक समझौता हो सकता है। जानकारी के मुताबिक, खूनी लड़ाई को रोकने के तिए एक मसौदा फ्रांस की राजधानी पेरिस में तैयार किया गया है। कतर, अमेरिका और मिस्र के राजदूतों के साथ बैठक में यह मसौदा तैयार हुआ था। अब इसे हमास के सामने पेश किया गया है। इसमें मुस्लिमों के पवित्र महीने रमजान के दौरान लड़ाई में 40 दिनों के युद्धविराम का प्रस्ताव है जो 10 मार्च के आसपास शुरू होगा।

अमेरिका के ओडीसियस लैंडर ने काम करना किया बंद, लैंड करने के बाद चंद्रमा पर फंस गया था एक पैर

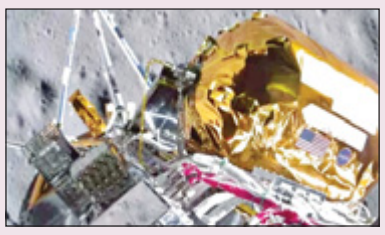

वॉशिंगटन । करीब 50 साल बाद पिछले महीने कोई अमेरिकी अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर उतरा था। ओडीसियस लैंडर जब चंद्रमा की सतह पर उतरा तो कुछ खराबी के चलते टीम का अंतरिक्ष यान से संपर्क टूट गया था। नासा ने बताया था कि उतरते समय मून लैंडर ओडीसियस का एक पैर चंद्रमा पर फंस गया था। इससे यह एक ओर झुक गया है। हालांकि, अब बुरी खबर सामने आई है। बताया जा रहा है कि एक हफ्ते बाद चांद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाले ओडीसियस ने काम करना बंद कर दिया। स्टैंडबाय मोड का भी नहीं दिया निर्देश बता दें, यह तब पता चला जब वैज्ञानिकों को अपने कंप्यूटर और पावर सिस्टम को स्टैंडबाय मोड में प्रवेश करने का निर्देश देने से पहले ओडीसियस से एक आखिरी तस्वीर मिली। स्टैंडबाय मोड का उद्देश्य लैंडर की क्षमता को दो से तीन हफ्ते तक और काम करने के लिए बनाया गया था। इंटुएटिव मशीन्स के प्रवक्ता जोश मार्शल ने बताया कि अंत में हुई क्रियाओं ने लैंडर की बैटरियों को खत्म कर दिया, जिससे ओडीसियस ने काम करना बंद कर दिया है। गुड नाईट ओडी कंपनी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, गुड नाईट ओडी। उम्मीद करते हैं यह फिर से काम करना शुरू करेगा। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में उतरा था गौरतलब है, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने बताया था कि उसका मून लैंडर ओडीसियस का एक पैर चंद्रमा पर फंस गया है इसकी वजह से वह एक ओर झुक गया था। इस खबर की पुष्टि लैंडर का निर्माण और संचालन करने वाली कंपनी इंटुएटिव मशीन्स ने भी की थी। ओडीसियस आधी सदी से भी अधिक समय में चंद्रमा पर उतरने वाला पहला अमेरिकी अंतरिक्ष यान है। यह रोबोटिक लैंडर 22 फरवरी शाम 6.23 बजे ईटी पर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में उतरा था। लेकिन, फ्लाइट कंट्रोलर्स को लैंडर के कम्युनिकेशन सिग्नल्स से सिग्नल लेने में कई मिनट लग गए थे। काम करने की स्थिति में नहीं इंटुएटिव मशीन्स के सीईओ स्टीव अल्टेमस ने कहा था।

हेली को ट्रंप समर्थकों का झेलना पड़ा विरोध, कहा- आपके पूर्व बॉस का एक और कार्यकाल देश को अराजकता...

वॉशिंगटन ।
अमेरिका में इस साल राष्ट्रपति का चुनाव होना है। इसके लिए सभी उम्मीदवार बढ़-चढ़कर तैयारियां कर रहे हैं। आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। राष्ट्रपति पद की रिपब्लिकन उम्मीदवार निक्की हेली ने अपने प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप पर एक बार फिर निशाना साधा। उन्होंने ट्रंप के चाहने वालों से कहा कि उनके पूर्व बॉस का एक और कार्यकाल देश को अगले चार साल के लिए अराजकता में धकेल देगा। हेली वर्जीनिया के रिचमंड और फॉल्स चर्च में आयोजित राजनीतिक रैलियों को संबोधित कर रही थीं।

1,215 डेलीगेट की जरूरत

बता दें, राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बनने के लिए ट्रंप और हेली को कम से कम 1,215 डेलीगेट की जरूरत है। पांच राज्यों आयोवा, न्यू हैंपशायर, नेवादा, दक्षिण कैरोलिना और मिशिगन में प्राइमरी चुनाव के बाद ट्रंप के पास 122 डेलीगेट हैं जबकि हेली के पास 24 डेलीगेट हैं। वहीं सर्वेक्षणों की निगरानी करने वाली रियल क्लियर पॉलिटिक्स के अनुसार, रिचमंड और फॉल्स चर्च में उनकी दोनों रैलियों में प्रदर्शनकारियों ने भाग लिया और कई लोगों ने कहा कि वे 77 वर्षीय ट्रंप के समर्थक हैं।

खुद के सिवा किसी की परवाह नहीं

रैलियों के दौरान हेली ने ट्रंप पर आरोप लगाया कि वह अपने सिवा किसी के बारे में परवाह नहीं करते हैं। न उन्हें देश की परवाह है और नहीं यहां के लोगों की। पूर्व राष्ट्रपति के समर्थन में उठती आवाजों पर उन्होंने कहा कि ट्रंप को राष्ट्रपति के रूप में चुनने का मतलब है कि अमेरिका में चार साल तक अराजकता का माहौल रहेगा।

मैं अपने बच्चों और आपके बच्चों के लिए...

उन्होंने कहा, हर कोई यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि आखिर मैं यह चुनाव क्यों लड़ रही हूं, तो जवाब यह है कि मैं अपने बच्चों और आपके बच्चों के लिए ऐसा कर रही हूं। उन्होंने जोर देकर कहा कि ट्रंप और मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन ने देश की अर्थव्यवस्था को खराब कर दिया है। उन्होंने कहा कि व्हाइट हाउस में एक अकाउंटेंट रखने का समय आ गया है। इस पर वहां मौजूद लोगों ने जमकर तालियां बजाईं।

सुरक्षा कारणों से मेरीलैंड स्टेट हाउस में लॉकडाउन, लोगों को अपने घरों में रहने के दिए गए थे निर्देश

वॉशिंगटन । एनापॉलिस में मेरीलैंड की राजधानी में सुरक्षा कारणों की वजह से लॉकडाउन लगाया गया था। गवर्नर के कार्यालय की तरफ से एक बयान जारी कर इसकी जानकारी दी गई है। गवर्नर के बयान के अनुसार, सुरक्षा कारणों से मेरीलैंड स्टेट हाउस में लॉकडाउन लगाया गया है। इस समय अन्य कोई जानकारी नहीं है। बयान में आगे कहा गया, स्टाफ, कर्मियों और कम्यूनिटी के सदस्यों को सुरक्षित स्थानों पर रहकर पुलिस या कानून प्रवर्तन की तरफ से जारी निर्देशों का पालन करना चाहिए। आसपास के इलाकों में रहने वाले स्थानीय लोगों को अपने घरों में रहने के लिए कहा गया था। उन्हें अपने दरवाजों को लॉक करने के साथ घरों की बत्तियां बुझाने का आदेश दिया गया था। आधे घंटे बाद इलाके में लॉकडाउन लगाया गया। मेरीलैंड स्टेट पुलिस स्टेट हाउस बिल्डिंग के भीतर शरण लेने वाले स्टाफ और कर्मियों को वहां से बाहर निकालने की कोशिश करने लगी। सैनिकों ने मेरीलैंड स्टेट हाउस में तलाशी ली।

भारतीय-अमेरिकियों ने हेली को सराहा

वर्जीनिया में भारतीय अमेरिकियों की अच्छी खासी आबादी रहती है। ऐसे में इन रैलियों में कई भारतीय-अमेरिकी आए। उन्होंने कहा कि यह उनके और ट्रंप के बीच दिन-रात का अंतर है।

प्रख्यात भारतीय अमेरिकी सुरेश शेनॉय ने कहा, वह बहुत करिश्माई हैं, वह चतुर हैं, वह दयालु हैं। वह एक बहुत ही अच्छी वक्ता है और उन्होंने सभी बातें सही कहीं हैं। उन्होंने कई अलग-अलग तरीकों से नेतृत्व का प्रदर्शन किया। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह राष्ट्रपति पद के लिए सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार हैं।

शेनॉय ने रैली के बाद कहा, निक्की हेली के बारे में मुझे जो पसंद आया वह यह है कि हर चीज डेटा और संख्या के साथ बोलती हैं। अन्य राजनेताओं की तरह नहीं। मैं सच में इसके लिए उनकी प्रशंसा करती थी। और साथ ही उन्होंने अमेरिका के लिए जो विजन रखा है, मुझे लगता है कि वह शानदार है।

हेली की पहली रैली में शामिल वर्जीनिया के सचिन चंद्रा ने इसे खास बताया। उन्होंने कहा, हेली के पास विचारों और नीतियों की स्पष्टता है। कोई गुप्त उद्देश्य नहीं है। यह वही है जिसके लिए एक राष्ट्रपति को खड़ा होना चाहिए।

भारत की दो टूक- पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के रक्तपात से लाल; कश्मीर पर तुर्किये की टिप्पणी अस्वीकार्य

जिनेवा ।
संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) में भारत ने जवाब के अधिकार का प्रयोग करते हुए कहा, हम उस देश पर ज्यादा ध्यान नहीं दे सकते जो लाल रंग में डूबा है। वह दुनियाभर में प्रायोजित आतंकवाद के रक्तपात से लाल है। अपने ऋणग्रस्त राष्ट्रीय बैलेंस शीट पर लाल है। यहां के लोग शर्मिंदगी से लाल हैं, क्योंकि उनकी सरकार वास्तविक हितों को पूरा करने में नाकाम रही है। यूएनएचआरसी के 55वें नियमित सत्र के मंच पर जम्मू-कश्मीर का जिक्र करने पर भारत ने पाकिस्तान व तुर्किये को फटकारते हुए जम्मू-कश्मीर व लद्दाख को भारत का अभिन्न अंग बताया। भारत की प्रथम सचिव अनुपमा सिंह ने कहा, किसी भी देश को भारत के अंदरूनी मामलों पर भविष्य में अनचाही टिप्पणियों से बचना चाहिए। पड़ोसी देश लाल रंग से लथपथ है। पाकिस्तान ने एक बार फिर परिषद के मंच का इस्तेमाल भारत के खिलाफ सरेआम झूठ प्रचारित करने के लिए किया, जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। पाकिस्तान को इस मुद्दे पर बोलने का कोई हक नहीं है।

तुर्किये की टिप्पणी खेदजनक, ऐसा न करने की नसीहत

भारत ने कश्मीर के मामले में तुर्किये को भी तगड़ी फटकार लगाई। अनुपमा सिंह ने कहा, हमें कश्मीर मामले पर तुर्किये की टिप्पणी पर खेद है। हम उम्मीद करते हैं कि तुर्किये भविष्य में हमारे आंतरिक मामलों पर टिप्पणी करने से बचेगा।

दुष्प्रचार कर रहा

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की खराब दशा पर अनुपमा ने कहा, भारत में सम्मान से रह रहे अल्पसंख्यकों की स्थिति पर एक ऐसा देश (पाकिस्तान) दुष्प्रचार कर रहा है जहां अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न हो रहा है। अगस्त 2023 में पाकिस्तान के जरनवाला में ईसाइयों के खिलाफ बड़े पैमाने पर हिंसा की गई और उनके 89 घर जला दिए गए।

अबू धाबी में चल रहे डब्ल्यूटीओ के मंत्रिस्तरीय सम्मेलन को एक दिन के लिए बढ़ाया, जानिए इस फैसले के पीछे की वजह

अबू धाबी ।
विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का मंत्री स्तर का 13वां सम्मेलन संयुक्त अरब अमीरात के अबू धाबी में चल रहा है। 28 फरवरी को समाप्त होने वाला सम्मेलन अब एक मार्च तक के लिए बढ़ा दिया है। दरअसल, यह फैसला इसलिए लिया गया है ताकि मुख्य मुद्दों पर चर्चा हो सके और एक नतीजे पर पहुंचा जा सके। बताया जा रहा है कि डब्ल्यूटीओ के महानिदेशक नगोजी ओकोंजो इवेला ने एमसी13 के अध्यक्ष थानी बिन अहमद अल जायौदी और मंत्रियों के साथ बातचीत करने के बाद यह फैसला लिया। इससे पहले मंत्रिस्तरीय सम्मेलन 28 फरवरी को रात आठ बजे (स्थानीय समय) समाप्त होने वाला था।

विभिन्न वार्ताओं पर सहमति बनाने के लिए समय

डब्ल्यूटीओ ने एक बयान में कहा, 28 फरवरी को प्रतिनिधिमंडल प्रमुखों की बैठक में डीजी ओकोंजो-इवेला ने सदस्यों से मंत्रिस्तरीय बैठक में विभिन्न वार्ताओं पर सहमति बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पर जोर दिया। इसके साथ ही, इस बात को ध्यान में रखने का आह्वान किया कि सार्थक समझौते करने के लिए समय निकलता जा रहा है।

3 मार्च को चुना जाएगा पाकिस्तान का नया प्रधानमंत्री, पीएमएल-एन के शहबाज शरीफ रेस में सबसे आगे

इस्लामाबाद ।
पाकिस्तान को नया प्रधानमंत्री तीन मार्च को मिलेगा। बीते दिन पाकिस्तान की नेशनल असेंबली के सचिवालय ने देश के नए प्रधानमंत्री के चुनाव के कार्यक्रम की घोषणा की। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेता शहबाज शरीफ प्रधानमंत्री पद की रेस में सबसे आगे माने जा रहे हैं।

जानकारी के मुताबिक, उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र जमा कर सकते हैं। नामांकन पत्रों की जांच उसी दिन पूरी कर ली जाएगी। प्रधानमंत्री के चुनाव की प्रक्रिया नवनिर्वाचित सांसदों के जरिए होगी।

पीएम पद की रेस में कौन

पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) ने 72 साल के शहबाज शरीफ को प्रधानमंत्री पद के लिए नामित किया है।

उमर अयूब खान जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के उम्मीदवार हैं।

राष्ट्रपति चुनाव का कार्यक्रम भी जल्द जारी होगा

इससे पहले बताया गया था कि चुनाव आयोग (ईसीपी) एक मार्च को राष्ट्रपति चुनाव का कार्यक्रम जारी कर सकता है, जिसमें पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के आसिफ अली जरदारी की जीत लगभग तय मानी जा रही है। पाकिस्तानी मीडिया ने ईसीपी के प्रवक्ता के हवाले से कहा था सभी चार प्रांतीय विधानसभाएं 29 फरवरी तक अस्तित्व में आएंगी और फिर राष्ट्रपति चुनाव के लिए जरूरी निर्वाचक मंडल के गठन का काम पूरा हो जाएगा।

सितंबर 2008 से 2013 तक देश के राष्ट्रपति रह चुके हैं जरदारी

पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेता शहबाज शरीफ के नेतृत्व में केंद्र में नई गठबंधन सरकार बनाने के लिए छह पक्षीय गठबंधन तैयार है। पीएमएल-एन पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के आसिफ अली जरदारी को राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। जरदारी इससे पहले सितंबर 2008 से 2013 तक देश के राष्ट्रपति रह चुके हैं।

त्रिशंकु परिणाम सामने आए थे

आठ फरवरी को हुए चुनाव के त्रिशंकु परिणाम सामने आए थे। किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। जिसके बाद पीएमएल-एन और पीपीपी ने गठबंधन बनाने का फैसला किया। यह गठबंधन इस शर्त पर बना कि पीपीपी के आसिफ अली जरदारी को राष्ट्रपति का पद मिलेगा। जबकि पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज को पंजाब प्रांत का मुख्यमंत्री पद मिलेगा।

30 दिनों के भीतर राष्ट्रपति चुनाव जरूरी

संविधान के अनुच्छेद 41 के मुताबिक, राष्ट्रपति का चुनाव आम चुनाव संपन्न होने के 30 दिनों के भीतर होना चाहिए। आठ फरवरी को आम चुनाव हुए थे। इसका मतलब 9 फरवरी से पहले राष्ट्रपति चुनाव हो जाने चाहिए।

ईरान के लोग चुनेंगे अपना राष्ट्रपति, 59 हजार मतदान केंद्रों पर वोटिंग शुरू

तेहरान ।
शिया मुस्लिम बहुल देश ईरान में संसदीय चुनाव हो रहे हैं। लोग देश के सर्वोच्च नेता यानी राष्ट्रपति को चुनने के लिए मतदान करेंगे। इसके लिए तैयारियां पूरी हो गई हैं। 2020 के संसदीय चुनावों के बाद देश काफी चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस चुनाव को लोकतांत्रिक सुधार, पश्चिमी देशों के साथ तकरार और खराब अर्थव्यवस्था की कसौटी पर परखा जा रहा है। आइए, जानते हैं इसका पूरा हाल-

कैसे होते हैं चुनाव

ईरान में हर चार साल में फ्रांसीसी चुनाव प्रणाली की तर्ज पर चुनाव होते हैं। पहले दौर के मतदान में अगर किसी उम्मीदवार को 50 फीसदी से ज्यादा वोट नहीं मिले, तो दूसरे दौर में सबसे ज्यादा वोट पाने वाले दो उम्मीदवारों के लिए वोट डाले जाते हैं।

कौन मतदान कर सकता है और कब

मतदाताओं की आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। करीब 8.5 करोड़ आबादी वाले देश में 6.12 करोड़ से अधिक लोग मतदान करने के पात्र हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, ईरान में स्थानीय समयानुसार सुबह आठ बजे से वोट डलने शुरू हो जाएंगे और 10 घंटे तक मतदान केंद्र खुला रहेगा। हालांकि, अगर पहले के चुनाव देखे जाए तो अक्सर मतदान करने का समय मांग के अनुसार बढ़ा दिया जाता है।

मतदान केंद्र और सुरक्षा उपाय

देशभर में 59 हजार मतदान केंद्र होंगे। इसमें से तेहरान में पांच हजार और तेहरान के व्यापक प्रांत में 6,800 केंद्र बनाए गए हैं। 1,700 मतदान केंद्रों पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग उपकरणों का इस्तेमाल किया जाएगा। गृह मंत्रालय ने सेना के साथ इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स

(आईआरजीसी) और उसके बासिज बलों को निगरानी के लिए तैनात किया है। बताया जा रहा है कि ढाई लाख सुरक्षाबल के जवानों को तैनात किया गया है।

किसे चुना जाएगा

ईरान में संसद की 290 सीटों के लिए 15,000 से ज्यादा उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। पहले इसे इस्लामिक कंसल्टेटिव असेंबली कहा जाता था। यहां सदस्यों का कार्यकाल चार साल का है और संसद में पांच सीटें धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित हैं। संसदीय चुनाव से अलग ईरान के लोग ही 88 सीटों वाली असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स के लिए भी वोट डालेंगे। आठ साल के कार्यकाल वाला यह पैनल अगले सुप्रीम लीडर को नियुक्त करेगा।

चुनाव में लोग वोट देंगे या नहीं

मतदाताओं की उदासीनता चिंता का विषय बनी हुई है क्योंकि देश विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा है। 2020 में पिछले संसदीय चुनावों में 42 प्रतिशत मतदान हुआ था, जो 1979 में इस्लामी गणराज्य की स्थापना के बाद से सबसे कम था। 2021 के राष्ट्रपति चुनावों में, केवल 48 प्रतिशत मतदाताओं ने अपना वोट डाला, जो हाल के वर्षों में घटती भागीदारी का संकेत है।

मतदान को प्रभावित करने वाले कारक

साल 2020 में कई कारण बने, जिससे लोगों ने वोट डालने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। इसमें अर्थव्यवस्था चलाने के तरीके, सालों से चले आ रहे प्रदर्शनों में उलझा देश, परमाणु कार्यक्रम को लेकर पश्चिमी देशों से तनाव और यूक्रेन पर हमले में रूस को समर्थन, कुद्स फोर्स के कमांडर कासिम सोलेमानी की अमेरिका में हत्या और कोविड-19 महामारी जैसे कारक शामिल हैं। इसके अलावा देश में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी की समस्या भी एक बड़ा कारण है।

विपक्ष की गतिशीलता

सुधारवादी मोर्चा, जो एक विपक्षी दल के सबसे करीबी चीज के रूप में कार्य कर रहा है, ने अर्थहीन और गैर-प्रतिस्पर्धी चुनाव में भाग नहीं लेने का फैसला लिया है। हालांकि, कुछ उम्मीदवार संसद में संभावित रूप से एक गैर-रूढ़िवादी अल्पसंख्यक बनाने के लिए सहयोग कर रहे हैं।